डॉक्टर डूलिटिल की यात्राएं

हयू लोफ्टिंग

डॉक्टर डूलिटिल की यात्राएं

हयू लोफ्टिंग

एम. डी. डिग्री का मतलब था कि वो एक मेडिकल डॉक्टर थे और बहुत कुछ जानते थे.

डॉक्टर डूलिटिल इंग्लैंड के एक छोटे शहर पडिलबाई-ओन-द-मार्श में रहते थे.

जब वो अपनी ऊंची टोप पहनकर सड़क पर चलते थे तो शहर के सब कुत्ते, बिल्लियाँ, गायें, घोड़े, सूअर, मुर्गियां, भेड़ें, मेंढक और कछुए उनके पीछे-पीछे दौड़ते थे.

लोगों का इलाज करने की बजाए डॉक्टर डूलिटिल जानवरों का इलाज करते थे. उन्हें जानवरों से बहुत प्रेम था. जानवर भी उन्हें बहुत चाहते थे. दूर-दूर से जानवर डॉक्टर डूलिटिल से अपना इलाज कराने के लिए आते थे. और फिर वापिस लौटने की बजाए वे वहीं रह जाते थे.

जल्द ही डॉक्टर डूलिटिल का घर अनेकों प्रकार के जानवरों से भर गया. उनके घर में इतने ज्यादा जानवर हो गए कि वहां पर डॉक्टर डूलिटिल के रहने के लिए भी बहुत कम जगह बची.

डॉक्टर डूलिटिल ने अपने चहेते पालतू
जानवरों को नाम भी दिए थे:

टू-टू नाम का उल्लू था.

वहां पर डब-डब नाम की बत्तख थी.

और पोलीनीशिया
नाम का तोता था.

जिप नाम का कुत्ता था.

और गब-गब नाम का सूअर था.

पर डॉक्टर डूलिटिल के घर में इतने
अधिक चूहे, बत्तखें, मुर्गे, कछुए,
खरगोश, साही और मगरमच्छ थे कि
हरेक जानवर के लिए अलग-अलग
नाम देना उनके लिए संभव नहीं था.

एक बारिश वाले दिन पोलीनीशिया तोते ने डॉक्टर डूलिटिल से कहा, “क्योंकि अब आपके पास इतने सारे पालतू जानवर हैं इसलिए आपको उनसे बातें करना सीखना चाहिए. हम सब आपको जानवरों की भाषा सिखायेंगे.”

डॉक्टर डूलिटिल ब्लैकबोर्ड के सामने बैठे. उनके पालतू जानवरों ने उन्हें कुछ पाठ पढ़ाये. जल्द ही डॉक्टर डूलिटिल ने जानवरों से बातचीत करना सीखा. फिर जानवर जो कुछ कहते वो डॉक्टर डूलिटिल समझ जाते.

जानवरों की भाषा सीखने के बाद एक रात डॉक्टर के घर का दरवाज़ा खुला और एक दौड़ता हुआ बन्दर अन्दर घुसा.

“डॉक्टर!” बन्दर ने कहा.

“मेरे नाम ची-ची है.

“मैं आपको बंदरों के बारे में बताने के लिए सीधा अफ्रीका से आया हूँ. वहां के बंदरों को एक अजीब बीमारी हो गई है. बन्दर मर रहे हैं. हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अफ्रीका जाकर उनका इलाज करें. कृपाकर डॉक्टर हमारी विनती सुनें?”

“मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलूँगा,” डॉक्टर डूलिटिल ने कहा. फिर अगले दिन सुबह, डॉक्टर डूलिटिल, ची-ची और जिप और डब-डब, गुब-गुब और टू-टू और पोलीनीशिया अपना बोरिया-बिस्तरा बांधकर समुद्र तट पर गए.

डॉक्टर डूलिटिल ने एक नाविक का जहाज़ किराए पर लिया. फिर वे अपने साजो-सामान के साथ जहाज़ में चढ़े.

छह हफ़्तों तक वो समुद्र में
जहाज़ पर सवारी करते रहे.

इक्वेटर (भू-मध्यरेखा) पार करने के बाद
उन्हें कुछ उड़ने वाली मछलियाँ दिखाई दीं.

उड़ने वाली मछलियों ने कहा.
“यहाँ से अफ्रीका सिर्फ 50-मील दूर है.”

पर फिर अचानक एक तूफ़ान आया.
बहुत जोर की बिजली चमकी और बादल गरजे.
सायं-सायं करके हवा चली.
धुआंधार बारिश हुई.

फिर अचानक बहुत जोर की आवाज़ हुई.
जहाज़ चलना बंद हो गया.
जहाज़ एक ओर लुढ़ककर गिर पड़ा.
“मेरे दोस्तों,” डॉक्टर ने कहा.
“अब हमें अफ्रीका दौड़कर ही जाना होगा.”

“ज़रा रस्सी लाओ,” पोलीनीशिया चिल्लाई.
“डब-डब, तुम रस्सी का एक सिरा पकड़ो.
फिर उड़कर तट तक जाओ
और उस सिर को नारियल के पेड़ से बांधो.

“फिर जिन जानवरों को तैरना नहीं आता है
वे रस्सी को पकड़कर किनारे पहुँच सकते हैं.”
और इस तरह सभी जानवर
समुद्र के तट पर सुरक्षित पहुंचे.

वहां उन्होंने पहाड़ियों के ऊपर
एक अच्छी और सूखी गुफा में शरण ली.

अचानक ची-ची ने कहा, “चुप!
मुझे किसी के क़दमों की आवाज़ सुनाई दे रही है.”

उन्होंने जब बाहर झाँककर देखा
तो उन्हें जंगल में एक सैनिक आता दिखाई दिया.
उसके चेहरे पर एक नकाब था.
उसके एक हाथ में ढाल थी और
दूसरे हाथ में एक नुकीला भाला था.

“तुम सभी लोगों को जोल्लीगिन्की के महान राजा
के सामने हाज़िर होना पड़ेगा,” सैनिक ने कहा.
“यह सारी ज़मीन महान राजा की है.
मेरे पीछे-पीछे चलो!”

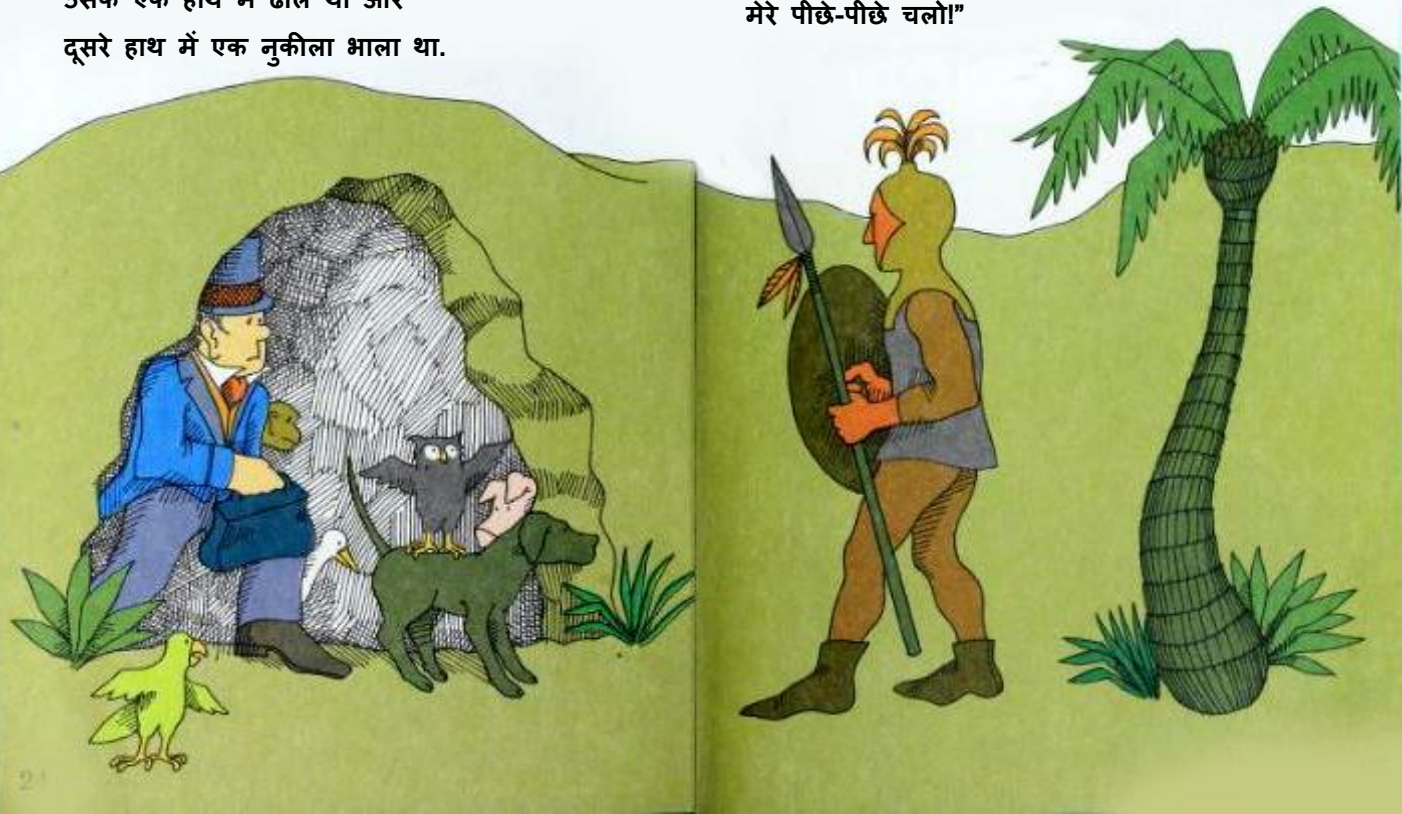

जंगल में कुछ देर चलने के बाद
उन्हें महान राजा का महल दिखाई दिया.
राजा एक छतरी के नीचे बैठा था.
“तुम मेरी ज़मीन में होकर यात्रा नहीं कर सकते,”
महान राजा ने उनसे कहा.
फिर उसने अपने सैनिकों से कहा,
“इस दवाई वाले आदमी और सभी जानवरों को
मेरे सबसे मज़बूत जेल में ले जाकर बंद कर दो!”

उस जेल में सिर्फ एक ही खिड़की थी. वो दीवार पर बहुत उंचाई पर स्थित थी और उसमें लोहे की मोटी सलाखें लगी थीं. जेल का दरवाज़ा भी बहुत मोटा और मज़बूत था. जेल की दीवारें मोटे-मोटे पत्थरों की बनी थीं. उन्हें देखकर गुब-गुब सूअर रोने लगा.
उन्हें देखकर डॉक्टर डूलिटिल भी चिंतित लगे.

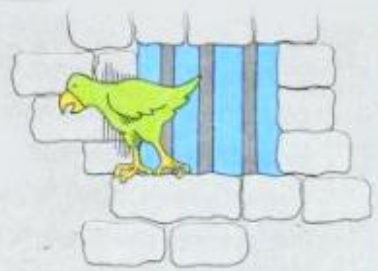

पर पोलीनीशिया तोते ने कहा,
“मैं छोटा हूँ और लोहे की छड़ों के
बीच से आसानी से आ-जा सकता हूँ.
आज रात में सलाखों के बीच से निकलकर
उड़कर महल में जाऊँगा.
फिर मैं किसी चाल से तुम लोगों को
यहाँ से मुक्ति दिलवाऊंगा.”

फिर उस रात तोता उड़कर महल में गया. वो चुपके से राजा के कमरे में घुसा और उसके पलंग के नीचे जाकर छिप गया. “मैं डॉक्टर डूलिटिल हूँ,” तोते ने बिल्कुल उसी लहजे में कहा जो डॉक्टर डूलिटिल उपयोग करते. “आप मुझे देख नहीं सकते क्योंकि मैंने खुद को अदृश्य बना लिया है. अब मेरी बात सुनो. मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ!

“तुम मुझे और मेरे जानवरों को अपने राज्य में यात्रा करने दो, नहीं तो मैं तुम्हें भी बंदरों जैसा बीमार बना दूंगा. तत्काल, अपने सैनिकों से जेल का दरवाज़ा खुलवाओ, नहीं तो सुबह होने तक तुम्हें चेचक का रोग हो जायेगा.”

यह सुनकर राजा कांपने लगा. वो अपने पलंग से कूदकर उठा.

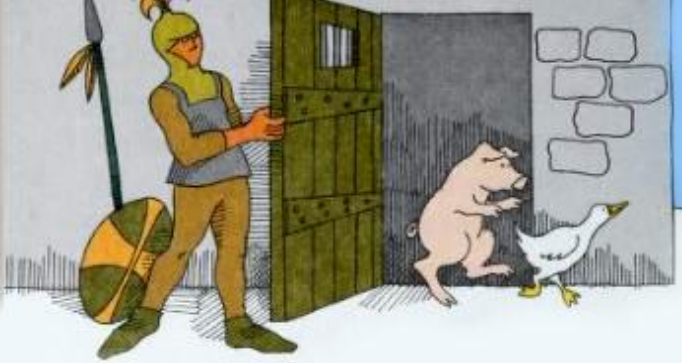

राजा ने अपने सैनिकों से तुरंत जेल खोलने को कहा. डॉक्टर और सारे जानवरों को जेल से रिहा किया गया.

फिर वे सब जंगल में दौड़े और उस ओर चले जहाँ बन्दर रहते थे. सब-के-सब अपना पूरा दम लगाकर दौड़े.

पर जब राजा को पता चला कि तोते ने उसे पागल बनाया था तो राजा आग-बबूला हो गया. वो रात्रि के कपड़े पहने ही दौड़ा. उसने अपने पूरी सेना को जगाया. उसने उन्हें जंगल में डॉक्टर डूलिटिल को पकड़ने के लिए भेजा.

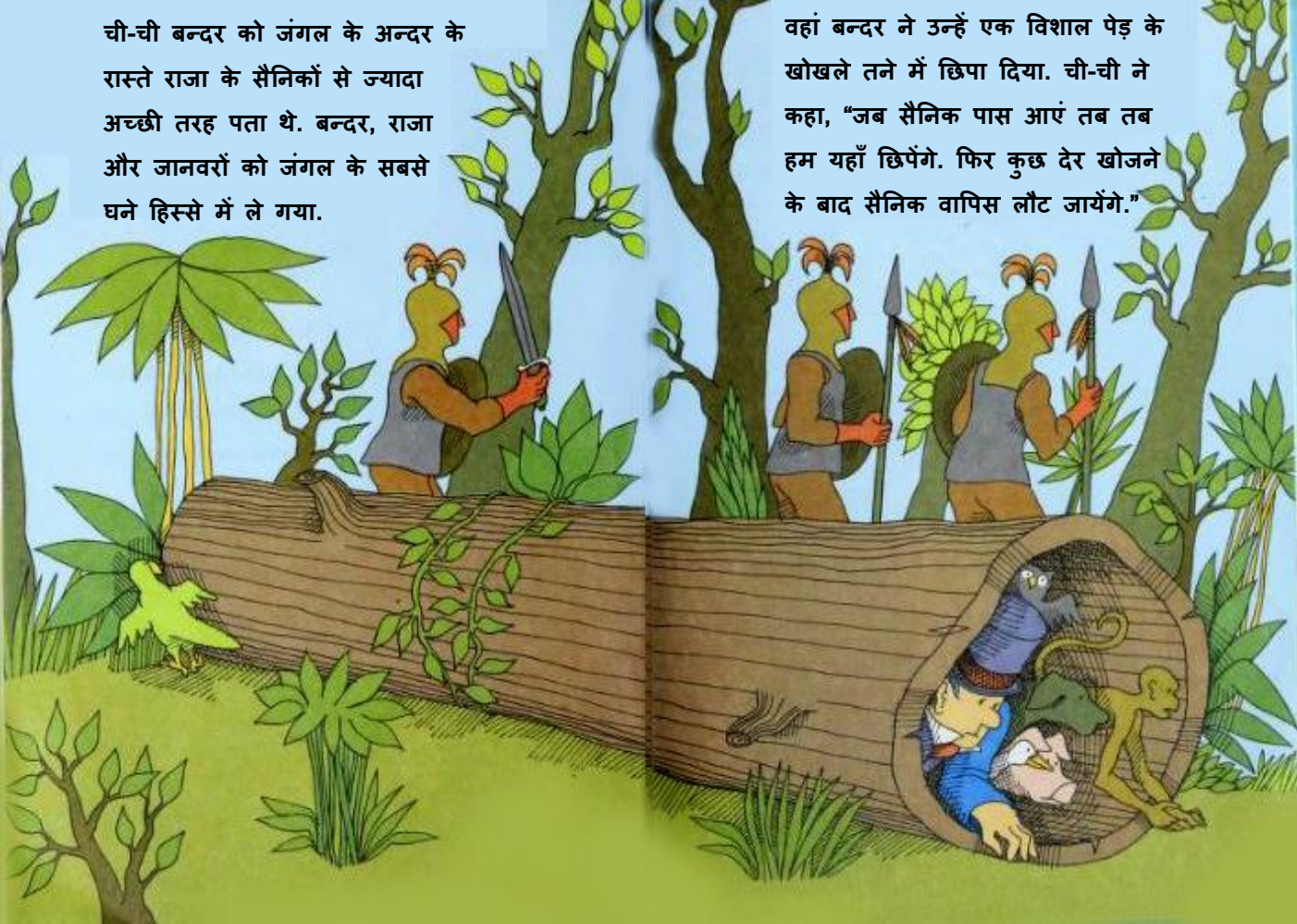

ची-ची बन्दर को जंगल के अन्दर के रास्ते राजा के सैनिकों से ज्यादा अच्छी तरह पता थे. बन्दर, राजा और जानवरों को जंगल के सबसे घने हिस्से में ले गया.

वहां बन्दर ने उन्हें एक विशाल पेड़ के खोखले तने में छिपा दिया. ची-ची ने कहा, “जब सैनिक पास आएं तब तब हम यहाँ छिपेंगे. फिर कुछ देर खोजने के बाद सैनिक वापिस लौट जायेंगे.”

जब सारे सैनिक वापिस चले गए तब ची-ची, डॉक्टर और बाकी जानवरों को छिपने वाले स्थान से बाहर लाया. फिर वे सभी बंदर के राज्य की तरफ चले.

उस शाम उन्हें बहुत सारे बन्दर दिखाई दिए. बन्दर पेड़ों पर बैठे थे. वे बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे. जब उन्होंने मशहूर डॉक्टर डूलिटिल को देखा तो बन्दर भयंकर शोर मचाने लगे. वे ख़ुशी से चीखने-चिल्लाने लगे. वे अपने हाथ हिलाने लगे. वे डॉक्टर के स्वागत में एक डाल से दूसरी डाल पर कूदने लगे.

पर राजा के सैनिक वापिस नहीं गए थे. वे अभी भी पीछा कर रहे थे. जैसे ही उन्होंने डॉक्टर डूलिटिल को देखा वो उन्हें पकड़ने के लिए दौड़े. इसलिए डॉक्टर डूलिटिल और उनके जानवर अपनी जान बचाने के लिए पूरा दम लगाकर दौड़े.

फिर वो एक ऐसी जगह पर पहुंचे जो बहुत ऊंचाई पर थी. उनके सामने नीचे गहराई पर एक नदी थी. बंदरों का राज्य नदी के उस पार था.

जिप – कुत्ते ने उस खाई में थोड़ा झुककर देखा और वो गिरते-गिरते बचा. “हम लोग भला नदी कैसे पार करेंगे?” उसने पूछा.

तब बंदरों के लीडर ने बाकी बंदरों को आदेश दिया, “चलो एक पुल बनाओ! जल्दी! फ़ौरन! तुरंत एक पुल बनाओ!”
फिर चुटकी बजाते ही बंदरों ने एक-दूसरे के हाथ, पैर, पूँछ पकड़कर एक पुल बनाया.

वो पुल पूरी तरह से बंदरों का बना था.
फिर बंदरों के लीडर ने कहा,
“चलो! पुल को पार करो!
सब लोग जल्दी करो! हमारे शरीर के बने पुल को पार करो!”

पहले तो डॉक्टर डूलिटिल और उनके
साथियों को कुछ डर लगा.
वो पुल कितना सकरा था!
पुल नदी से कितनी ऊंचाई पर था!
पर एक-एक करके सभी सुरक्षित पार हो गए.
सबसे अंत में डॉक्टर डूलिटिल ने पुल पार किया.
जैसे ही वे नदी के उस पार पहुंचे .....

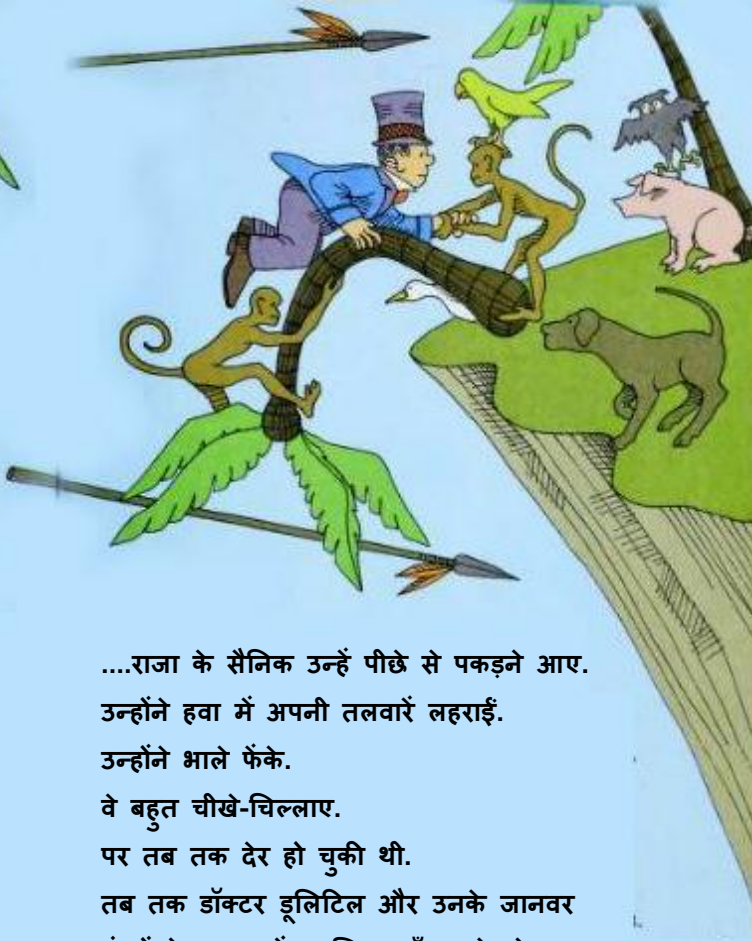

....राजा के सैनिक उन्हें पीछे से पकड़ने आए.
उन्होंने हवा में अपनी तलवारें लहराईं.
उन्होंने भाले फेंके.
वे बहुत चीखे-चिल्लाए.
पर तब तक देर हो चुकी थी.
तब तक डॉक्टर डूलिटिल और उनके जानवर
बंदरों के राज्य में सुरक्षित पहुँच चुके थे.

डॉक्टर डूलिटिल को वहां सैकड़ों-हजारों
बीमार बन्दर मिले.
उन्होंने सभी बंदरों को टीके लगाए.
तीन दिनों और तीन रातों तक
दूर-दराज़ के जंगलों से बन्दर आए.
वे दूर-दूर की वादियों से आए.
वे पहाड़ियां और पर्वत पार करके आए.

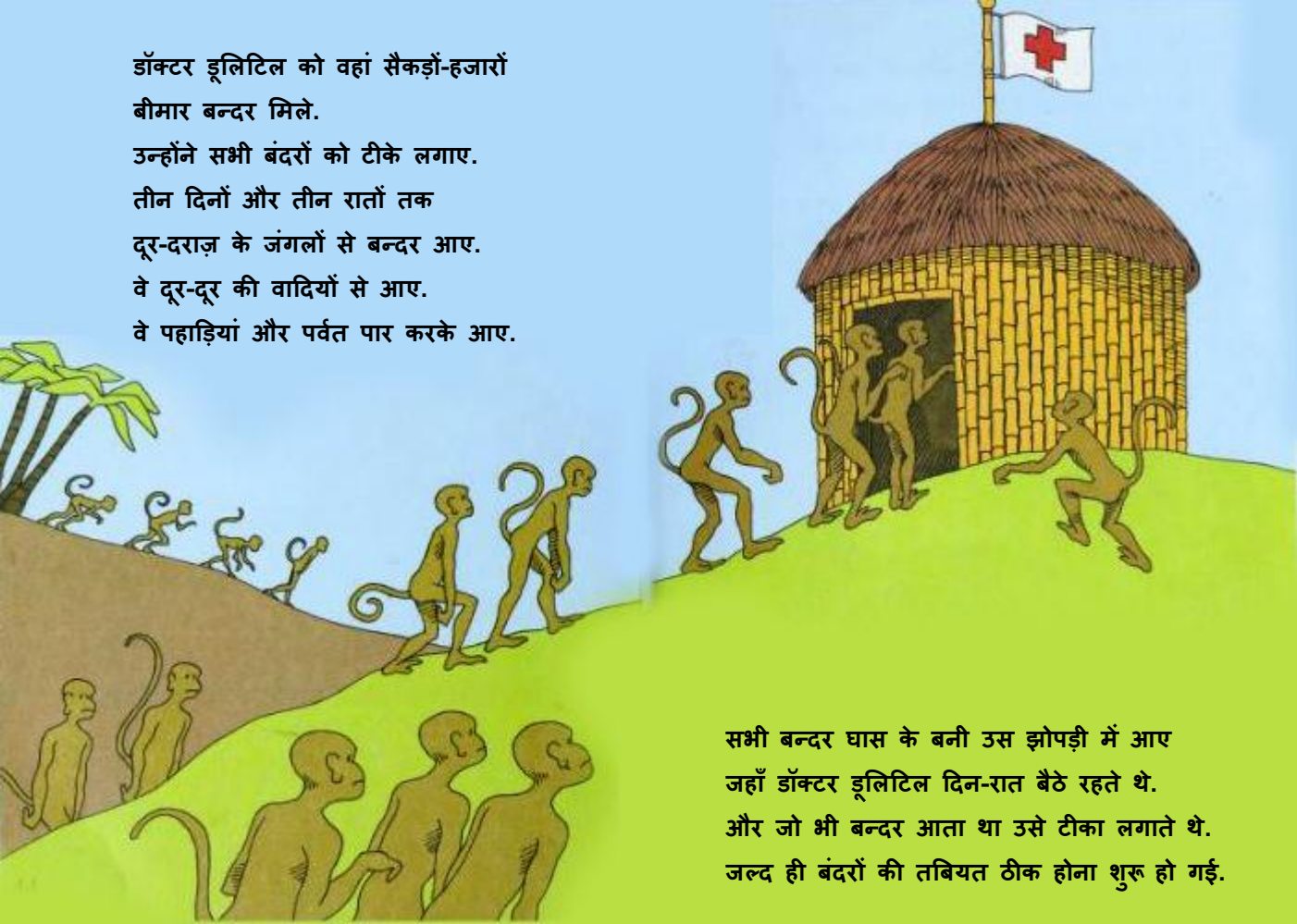

सभी बन्दर घास के बनी उस झोपड़ी में आए
जहाँ डॉक्टर डूलिटिल दिन-रात बैठे रहते थे.
और जो भी बन्दर आता था उसे टीका लगाते थे.
जल्द ही बंदरों की तबियत ठीक होना शुरू हो गई.

पर तब तक डॉक्टर काम करते-करते
एकदम थक गए थे.
अंत में वो थककर पलंग पर जाकर लेट गए.
वहां वो बिना करवट लिए तीन दिनों और
तीन रातों तक लगातार सोते रहे.

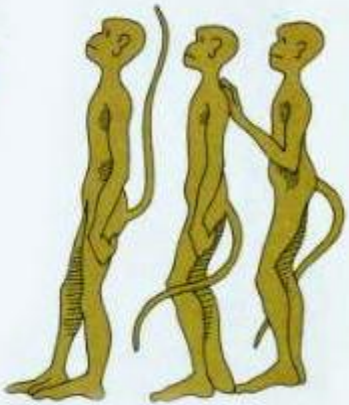

जब वो अपनी नींद से उठे तो डॉक्टर डूलिटिल ने पाया कि अब कोई भी बन्दर बीमार नहीं था. सब बंदरों की तबियत ठीक हो गई थी! डॉक्टर डूलिटिल के टीकों से सब बंदरों का इलाज हो गया था. तब उन्होंने अपने शहर पडिलबाई-ओन-द-मार्श वापिस जाने की इच्छा ज़ाहिर की.

यह सुनकर बंदरों को बहुत आश्चर्य हुआ.
बंदरों को लगा था कि अब डॉक्टर डूलिटिल उनके साथ हमेशा रहेंगे.
उस रात बंदरों ने मिलकर एक मीटिंग की.
एक बड़े बन्दर ने कहा, "यह बड़े दुःख की बात है कि डॉक्टर डूलिटिल हमें छोड़कर वापिस जा रहे हैं. जाते समय हमें उन्हें कोई बढ़िया उपहार देना चाहिए."
"अगर तुम डॉक्टर डूलिटिल को वाकई में खुश करना चाहते तो तो उन्हें एक ऐसे जानवर दो जो उन्होंने पहले कभी देखा नहीं हो."
"इगुआना?"
"नहीं!"
"ओकापी?"
"नहीं!"
"पुशमी-पुलयू?"
"हाँ!"
"चलो फिर हम उन्हें एक पुशमी-पुलयू देंगे."

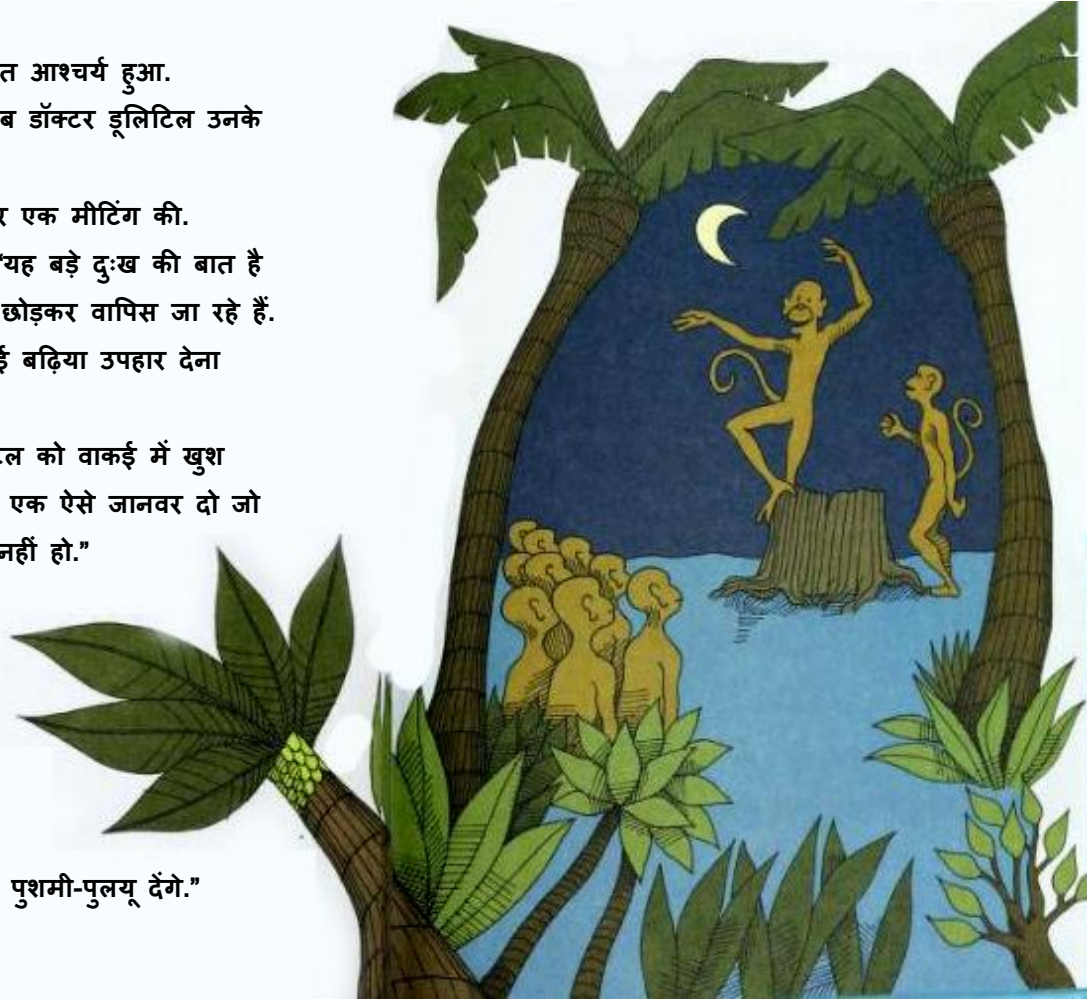

वर्तमान में पुशमी-पुलयू लुप्त हो चुकी हैं.
पर जब डॉक्टर डूलिटिल अफ्रीका में थे तब कुछ पुशमी-पुलयू बची थीं.
पुशमी-पुलयू की कोई पूँछ नहीं होती थी.
पर उसके आगे-पीछे सींघों के साथ दो सिर ज़रूर होते थे.

दो सिर वाली पुशमी-पुलयू को पकड़ना बहुत मुश्किल था. क्योंकि जब एक सिर सोता था तो दूसरा पहरेदारी करता था. इसलिए पुशमी-पुलयू को आपने कभी किसी चिड़ियाघर में नहीं देखा होगा. क्योंकि उन्हें पकड़ना बहुत मुश्किल काम था.

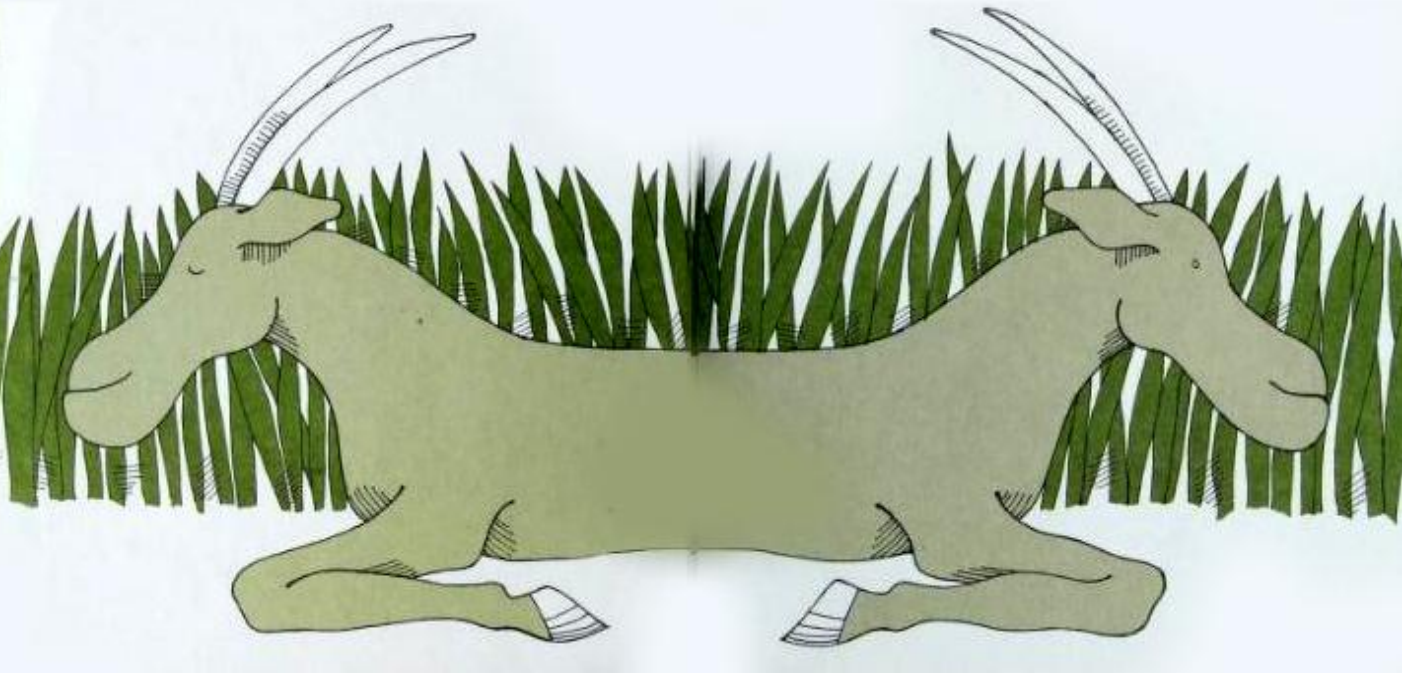

डॉक्टर डूलिटिल के लिए पुशमी-पुलयू पकड़ने के लिए बंदरों ने एक योजना बनाई.
वो एकदम चुपके से जंगल में शिकार करने गए.

फिर उन्होंने एक-दूसरे के हाथ पकड़कर एक गोला बनाया. पुशमी-पुलयू ने उन्हें आते हुए सुना. उसने बंदरों के गोले को तोड़ने की कोशिश की. पर वो उसमें असफल रही!

उन्होंने फिर एक ऐसी जगह चुनी
जहाँ पुशमी-पुलयू के मिलने की सम्भावना अधिक थी.

अंत में पुशमी-पुलयू को लगा कि गोले को तोड़कर कोई फायदा नहीं होगा. उसने बंदरों से पूछा कि आखिर वे क्या चाहते थे. बंदरों ने उससे पूछा कि क्या वो डॉक्टर डूलिटिल के साथ उनके घर वापिस जाना चाहेगी.

“बिलकुल नहीं!” पुशमी-पुलयू ने जवाब दिया.
तीन दिनों और तीन रातों तक बंदरों ने पुशमी-पुलयू को मनाने की कोशिश की.
अंत में उसने कहा, “चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ, पर एक शर्त पर. पहले मैं यह देखूँगी कि डॉक्टर डूलिटिल किस तरह के आदमी है.”

फिर पुशमी-पुलयू ने डॉक्टर डूलिटिल को एक नज़र देखा. वो समझ गई कि डॉक्टर एक नेक और भले इंसान थे. पुशमी-पुलयू ने उनसे कहा, “आपने इन बंदरों की बहुत सहायता की है. अब मैंने आपके साथ जाने का अपना मन बना लिया है.”

उसके बाद डॉक्टर और उनके जानवरों ने पुशमी-पुलयू के साथ मिलकर समुद्र तट की ओर प्रस्थान किया. बन्दर उन्हें अलविदा कहने के लिए उनके साथ-साथ गए.

सैकड़ों-हजारों बंदरों को अलविदा कहते हुए काफी समय लगा. हरेक बन्दर अपने इलाज के बाद डॉक्टर डूलिटिल से हाथ मिलाना चाहता था और उनका शुक्रिया अदा करना चाहता था.

उसके बाद पुशमी-पुलयू,
गुब-गुब, डब-डब, जिप, टू-टू
पोलीनीशिया और ची-ची
भी जहाज़ पर डॉक्टर डूलिटिल के साथ सवार हुए.

जल्द ही उनका जहाज़ समुद्र के तट से बहुत दूर चला गया. समुद्र उन्हें बहुत विशाल और बड़ा लगने लगा और वहां उन्हें अकेलापन महसूस होने लगा. वो अपना रास्ता खो गए. फिर उनका खाना भी ख़त्म होने लगा. हवा बहना बंद हो गई और जहाज़ एक ही जगह पर रुक गया. डॉक्टर डूलिटिल ने कहा, "मुझे लगता है कि हम कभी घर वापिस नहीं पहुँच नहीं पाएंगे." पर तभी उन्हें हवा में एक अजीब आवाज़ सुनाई दी. आवाज़ तेज़ और तेज़ होती गई.

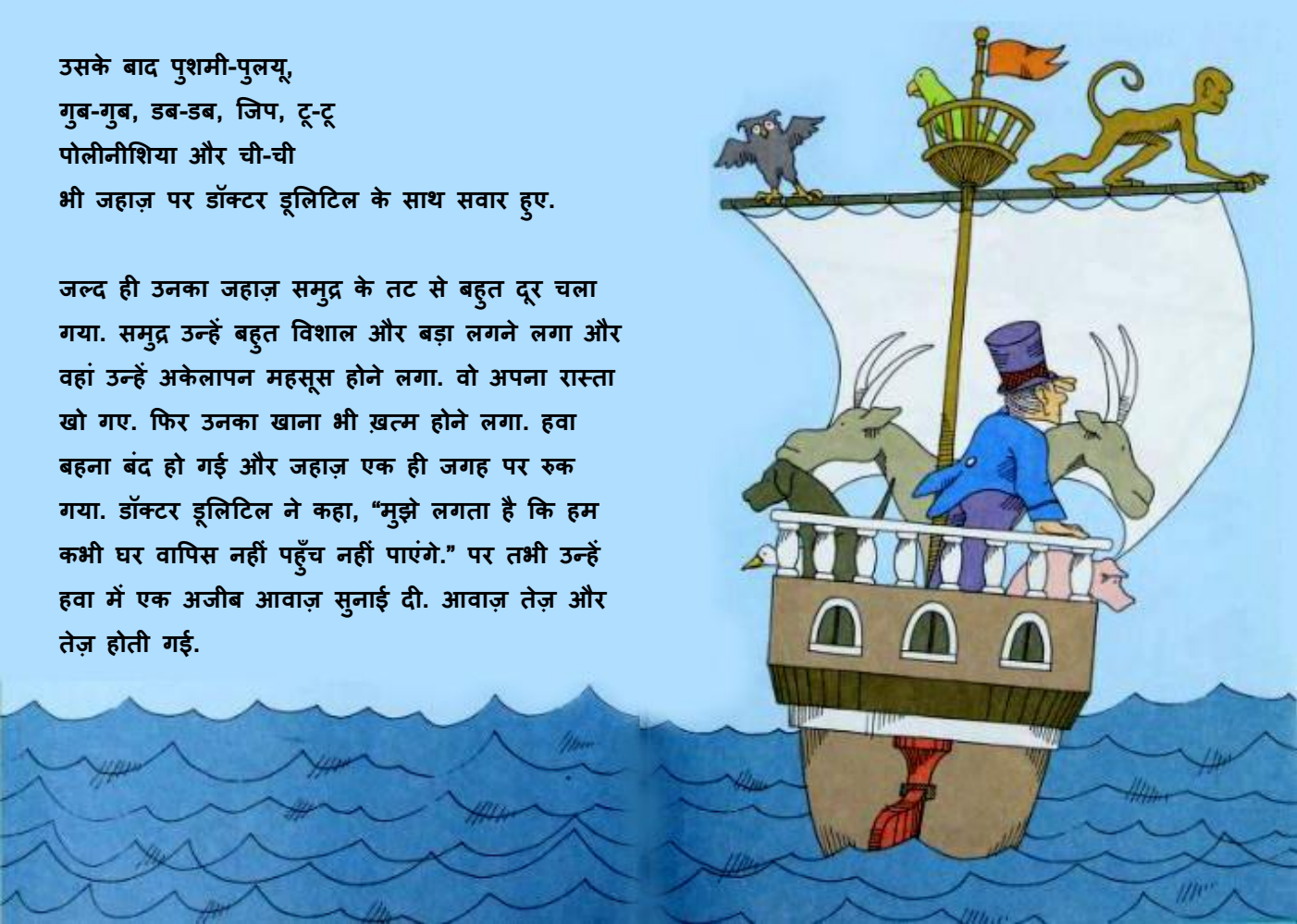

चिड़िये! हजारों-लाखों चिड़िये! हजारों-लाखों अबाबील, तेज़ी से आसमान में उड़ रही थीं. उन अबाबील चिड़ियों ने जहाज़ को देखा.

फिर चिड़िये नीचे आयीं. वो पानी पर कुछ देर उडीं. फिर उन्होंने जहाज़ की रस्सियों को अपने पैरों से पकड़ा. वो दुबारा उडीं. वो अपने पीछे-पीछे जहाज़ को खींचकर ले गयीं.

क्योंकि अब डॉक्टर का जहाज़ इतनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा था इसलिए डॉक्टर को अपनी टोप को दोनों हाथों से पकड़ना पड़ रहा था. अबाबीलें जहाज़ को खींचकर कुछ ही समय में इंग्लैंड के तट पर ले गईं.

जब डॉक्टर इंग्लैंड वापिस लौटे तो वहां पर सर्दी का मौसम था और सूरज चमक रहा था.

डॉक्टर अपने शहर में लौटकर बहुत खुश हुए.

रोजाना रात को खाने के बाद डॉक्टर और उनके जानवर मित्र अलाव की आंच में अपने हाथ सेंकते थे. तब डॉक्टर उन्हें किताबें पढ़कर सुनाते थे. डॉक्टर अफ्रीका के बारे में एक बड़ी और नायाब किताब लिख रहे थे. वे उसकी कहानियां अपने इन दोस्तों को सुनाते थे.

अफ्रीका! वो अजीब और सुन्दर जगह थी जिसे वो कभी नहीं भूल सकते थे! वहां पर बन्दर नारियल के पेड़ों पर बातें करते थे. अफ्रीका में ही उन्हें वो सुन्दर जानवर पुशमी-पुलयू मिला था!